

चित्रों में कहानी

बुनी हुई कहानी

विद्या और राजाराम शर्मा



इस कहानी के फोटोग्राफ मई-जून 2020 में, मैसूर में लिए गए थे।
संभव है कि ये चित्र, पक्षियों का वास्तविक आकार न दिखाएं।



A WOVEN TALE published by VIDYA ONLINE is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 Unported License (<https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/>)

Permissions beyond the scope of this license may be available at admin@vidyaonline.org

<http://vidyaonline.net>

चित्रों में कहानी

बुनी हुई कहानी

विद्या और राजाराम शर्मा

हिंदी : अरविन्द गुप्ता



A PARTNERSHIP FOR TEACHERS, CHILDREN AND EDUCATION



चित चित चित ची....

पंख फड़फड़ाते हुए उसने गाया

देखो!

आकर देखो

मैं यह घोंसला सिर्फ तुम्हारे लिए ही बुन रहा हूँ.





कहाँ? मैं कहाँ देखूँ?

उसने पूछा.

वो बिल्कुल खुश नहीं थी

वो घोंसला खोज रही थी

जिसे वो सिर्फ उसके लिए ही बुन रहा था.





चित चित चित ची....
पैरों पर झूलते हुए उसने गाया
देखो!
आकर देखो
मैं यह घोंसला सिफ तुम्हारे लिए ही बुन रहा हूँ.





उसमें कमरा कहां है?

अंदर घुसने का दरवाज़ा कहां है?

उसने पूछा.

वो बिल्कुल खुश नहीं थी

उस घोंसले से जो वो सिर्फ उसके लिए ही बुन रहा था.





चित चित चित चीं....

एक टहनी पर बैठकर उसने गाया

देखो!

आओ देखो

मैं यह घोंसला सिफ तुम्हारे लिए ही बुन रहा हूँ.





देखो, कमरा बहुत कमज़ोर है
उसका दरवाज़ा कहां है?
अंदर घुसकर उसने निरीक्षण करके कहा
वो बिल्कुल भी खुश नहीं थी
उस घोंसले से जो वो सिफ उसके लिए ही बुन रहा था.





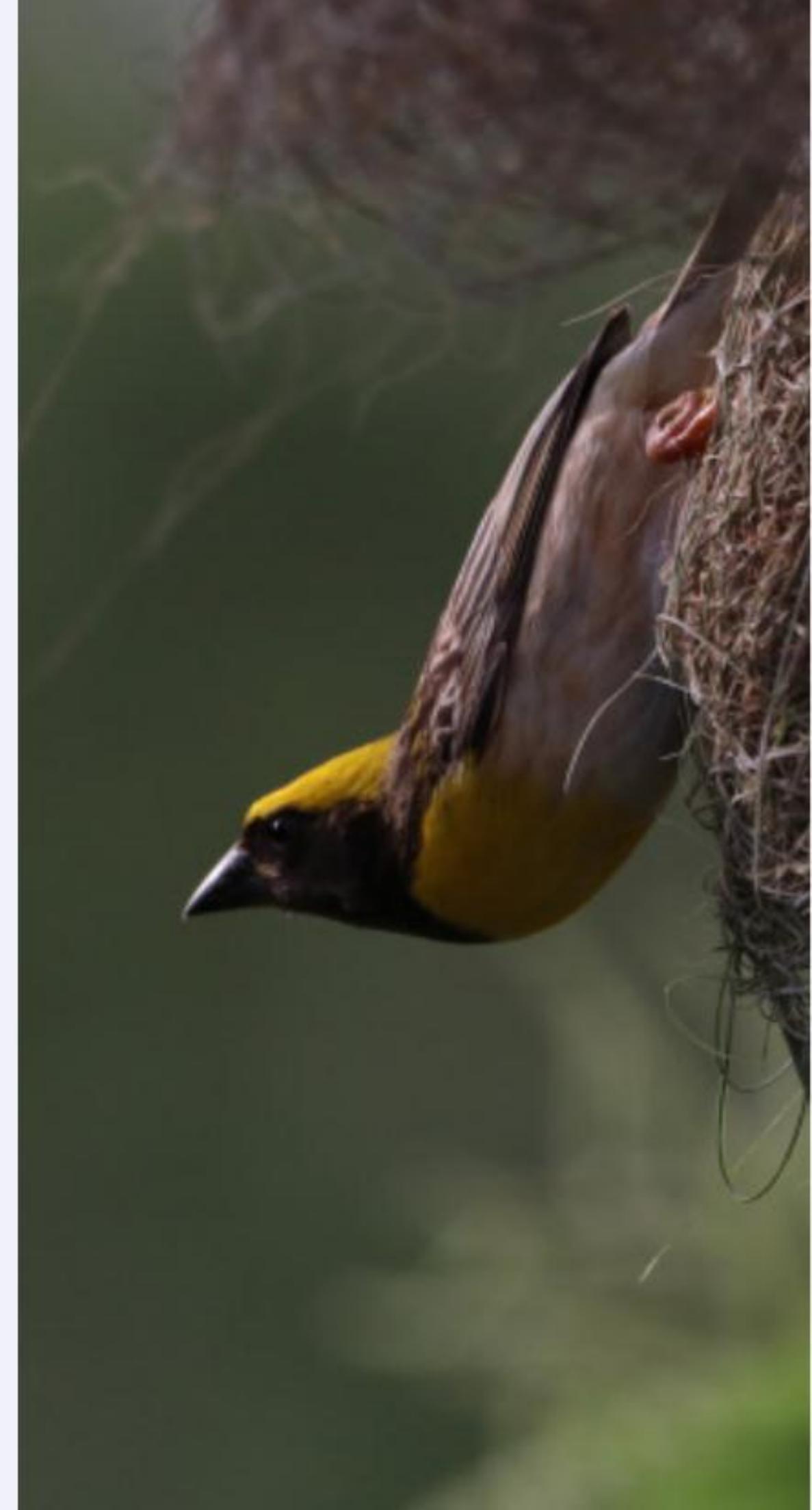
चित चित चित चीं....

घोंसले से लटककर उसने गाया

देखो!

आओ देखो

मैं यह घोंसला सिर्फ तुम्हारे लिए ही बुन रहा हूँ.





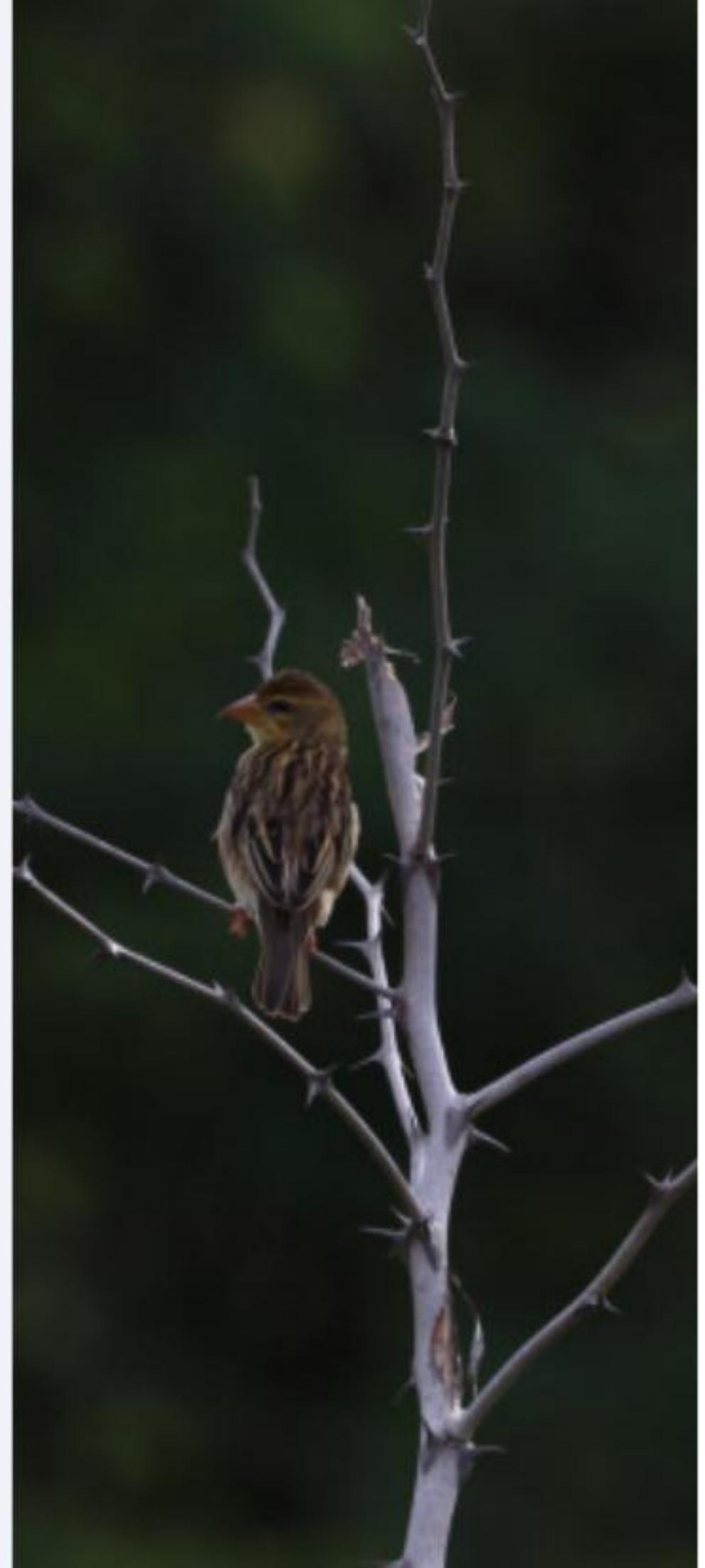
कमरा अच्छा है

वो मजबूत और स्थिर है

पर अंदर घुसने का दरवाज़ा कहाँ है?

उसने पूछा, वो खुश थी

उस घोंसले से, जो उसने सिफ उसके लिए ही बुना था.





चित चित चित ची....

दरवाज़ा बुनकर उसने गाया

देखो!

आओ देखो

मैंने यह घोंसला सिफ तुम्हारे लिए ही बुना है.





उसने बाहर से देखा;
उसने अंदर से देखा;
फिर मंजूरी का इशारा देते हुए उसने कहा
मुझे वो घोंसला बहुत पसंद है
जो तुमने सिर्फ मेरे लिए ही बुना है.

समाप्त

